ग्रामीण भारत में जाति–वर्ग एवं राजनीति का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

–डॉ. पवन कुमार पाण्डेय एवं डॉ. प्रेम प्रकाश पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
आचार्य नरेन्द्र देव किसान पी.जी. कालेज, बभनान, गोण्डा (उ.प्र.)

ग्रामीण सामाजिक संरचना के सामाजिक–आर्थिक, राजनीतिक संरचना में निरन्तर परिवर्तन हो रहा है। किसी भी समाज में होने वाला आर्थिक, सामाजिक या राजनीतिक परिवर्तन उस समय तीव्र गति से होता है जब परिवर्तन के वाह्य कारक एवं आंतरिक कारक आपस में तालमेल बनाकर अंतःक्रिया करते हैं। औद्योगीकरण, नगरीकरण, प्रौद्योगिकी का विकास, यातायात एवं संचार के साधन, प्रजातंत्रीकरण, शिक्षा का प्रसार एवं वैश्वीकरण आदि ऐसे कारक हैं, जो ग्रामीण सामाजिक संरचना में महत्वपूर्ण बदलाव ला रहे हैं।

जब किसी भी समाज के राजनीतिक संरचना में बदलाव आता है तो उसके साथ–साथ आर्थिक और सामाजिक संरचना में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। हालांकि कभी–कभी ऐसा भी होता है कि आर्थिक संरचना में परिवर्तन होने पर उसके साथ–साथ राजनीतिक संरचना भी परिवर्तित हो जाती है। सामाजिक और आर्थिक संरचना में परिवर्तन होने की प्रक्रिया में किसमें पहले परिवर्तन होता है और किसमें बाद में यह अलग–अलग देशों की परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

जाति की अवधारणा

भारतीय समाज व्यवस्था जाति पर आधारित रही है जिसके आधार पर समाज में उच्चता एवं निम्नता का क्रम निर्धारित होता रहा है। जाति एक ऐसा सामाजिक समूह है जिसका सदस्य व्यक्ति जन्म से होता है। प्रत्येक जाति का एक विशिष्ट नाम तथा व्यवसाय होता है। यह व्यवसाय ही उनका वंशागत पेशा होता है। एक जाति के सदस्य विवाह के मामले में अंतर्विवाही होते हैं अर्थात् वे अपने ही जाति में विवाह करते हैं। प्रत्येक जाति की अपनी एक विशिष्ट शैली भी होती है।

एस0वी0 केतकर के अनुसार, जाति एक समूह होता है जिसकी दो विशेषताएँ होती हैं – पहला, जन्म के आधार पर सदस्यता तथा दूसरा, अपनी जाति के बाहर विवाह करने पर निषेध। हर एक जातीय समूह का एक विशिष्ट नाम होता है।[1] अतः जाति एक स्थायी सामाजिक वर्ग है जिनमें व्यक्ति जन्म लेता है।

मजूमदार एवं मदान ने जाति को एक बंद वर्ग माना है वहीं कूले का कहना है कि जाति एक वर्ग है जो पूर्णतया आनुवांशिकता पर आधारित होता है। नेसफील्ड ने भी जाति को एक वर्ग के रूप में परिभाषित करते हुए कहा है कि ये वर्ग एक–दूसरे से खान–पान, विवाह आदि का सम्बन्ध नहीं रखते हैं।

वर्ग की अवधारणा

जाति के समान ही वर्ग की अवधारणा के सम्बन्ध में भी अनेक विचारकों ने अपना मत दिया है। वर्ग कुछ व्यक्तियों का एक समूह होता है जिसका निर्धारण आर्थिक एवं सामाजिक आधार पर किया जाता है। हालांकि वर्ग के निर्माण में राजनीतिक स्थिति का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है।

कार्ल मार्क्स ने वर्ग निर्धारण में आर्थिक आधार को महत्वपूर्ण माना है। मैक्सवेबर भी वर्ग निर्धारण के लिए आर्थिक आधार (सम्पत्ति) को महत्व देते हैं परन्तु वे इसके साथ–साथ प्रतिष्ठा तथा शक्ति को भी महत्वपूर्ण मानते हैं। वहीं वीरस्टीड ने वर्ग निर्धारण के सात आधार – सम्पत्ति, नातेदारी, निवास का स्थान, निवास की अवधि, व्यवसाय, शिक्षा एवं धर्म बतायो हैं।

वर्गों के निर्माण में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्गों के निर्माण का दूसरा मुख्य कारक सम्पत्ति है। आय के आधार पर ही वर्गों में उच्चता एवं निम्नता पायी जाती है। यही उच्चता एवं निम्नता, वर्ग का आधार है। भारतीय समाज में वर्गों की विभिन्नता उनकी स्थिति और सामाजिक प्रस्थिति पर भी निर्भर करती है। अन्य वर्गों के मुकाबले कुछ वर्ग अधिक सम्मान और सहूलियत प्राप्त कर लेते हैं। फलस्वरूप प्रायः ऐसा देखा गया है कि जिसकी जाति उच्च है, उसका वर्ग भी उच्च है और जिसकी जाति निम्न है, उसका वर्ग भी निम्न है।

जाति एवं वर्ग के बीच अंतःसम्बन्ध

भारतीय समाज में जाति एवं वर्ग की अवधारणा को अलग करना एक कठिन कार्य है। दोनों एक–दूसरे से घनिष्ठ रूप में संबंधित हैं। डी0 मैक्लेलन का कहना है कि भारत में वर्ग व्यवस्था, जाति व्यवस्था के पहले से विद्यमान थी क्योंकि आर्यों में वर्ण व्यवस्था का प्रचलन था जो वर्ग के आधार पर श्रम विभाजन करता था।[2]

बहुत से विद्वानों का मानना है कि जातियों की उत्पत्ति वर्गों से हुई है। बी0आर0 अम्बेडकर के अनुसार, वर्ग व्यवस्था ने जाति व्यवस्था का जन्म दिया है।[3] हिन्दू सामाजिक व्यवस्था में जातियों को धार्मिक रूप दिया गया है। यदि धर्म को जाति से पृथक कर दिया जाये तो जाति और वर्ग में कोई अन्तर नहीं रह जायेगा। हिन्दू समाज प्राचीन काल में वर्गों में ही विभाजित था परन्तु धीरे–धीरे इन वर्गों के साथ धार्मिक विचारधाराएं जुड़ गई और वर्ग जाति के रूप में परिवर्तित हो गये। पश्चिमी देशों में वर्गों का निर्माण आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक आधार पर होता है परन्तु भारत में वर्गों का निर्माण जातियों के आधार पर ही हुआ है।

डेनियल थार्नर ने भारतीय समाज का विभाजन मालिक, किसान और मजदूर के रूप में किया है। यही श्रम विभाजन के आधार थे और यह विभाजन जाति व्यवस्था पर आधारित था। उनका कहना है कि भारतीय समाज में जाति व्यवस्था एक बंद समूह ही है। इसका जन्म तब हुआ जब लोग अपनी जातीय स्थिति को ऊँचा उठाने के लिए अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने लगे।[4] उदाहरण के लिए एक कृषक वर्ग जिसके पास खेती करने के लिए भूमि होती है, वह कुछ व्यक्तियों का एक समूह होता है जो अनेक जातियों से मिलकर बनता है। अतः जाति और वर्ग एक–दूसरे से सम्बन्धित है।

प्राचीन भारत में वर्ग आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक समूहों के आधार पर नहीं बना था। इसका निर्माण अनेक जातियों के मिश्रण से हुआ था, जो राजनीतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से समान थे।[5] अतः भारतीय ग्रामीण समाज में जाति ही वर्गों के निर्माण के लिए उत्तरदायी रही है।

लुई ड्यूमा, आंद्रे बेत्तई, एम0एन0 श्रीनिवास आदि विद्वानों ने जाति व्यवस्था को संरचनात्मक व्यवस्था माना है जिसका विभाजन अनेक भागों और श्रेणियों में होता है। भारतीय समाज में मालिक और नौकर, जमींदार और काश्तकार, पूँजीपति और मजदूर, साहूकार और कर्जदार यह सब जाति व्यवस्था के बंधन से ऊपर होते हैं और सामाजिक संरचना में परिवर्तन

लाते हैं। औद्योगीकरण, नगरीकरण, वैश्वीकरण, पश्चिमी शिक्षा, यातायात और संचार के साधन, बाजार पर आधारित आर्थिक व्यवस्था बढ़ता श्रम विभाजन आदि सामाजिक और आर्थिक क्रियाएँ भारतीय समाज में नये–नये वर्गों को जन्म दे रही हैं जिनका निर्माण अनेक जातियों के लोगों से मिलकर होता है। इस प्रकार बनने वाले नये वर्गों से भारतीय समाज में सांस्कृतिक एवं संरचनात्मक परिवर्तन हो रहा है। इस बदलाव के पीछे व्यक्ति की अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करने की चाहत एवं महत्वाकांक्षा है।

जाति व्यवस्था की भाँति वर्ग व्यवस्था में भी श्रम विभाजन पाया जाता है और यह श्रम विभाजन अनेक प्रकार के वर्ग समूहों को जन्म देता है जो वर्ग के आधार होते हैं। भारतीय समाज में व्यापक परिवर्तन हो रहा है, यह एक आधुनिक औद्योगिक समाज बनने की प्रक्रिया में है। आधुनिक भारत में राष्ट्रीय भावना, धर्मनिरपेक्ष विचार और प्रगतिशील व्यक्ति भारत के लोगों को प्रभावित कर रहे हैं जो जाति व्यवस्था के परम्परागत मान्यताओं को तोड़ रहे हैं। परम्परागत भारत में आर्थिक और राजनीतिक सत्ता उच्च जातियों के पास केन्द्रित थी वह अब उनके पास से निकलकर पिछड़ी एवं अनुसूचित जातियों के हाथों में पहुँच चुकी है। शिक्षा और नौकरियों में आरक्षण की व्यवस्था लागू होने से पिछड़ी तथा अनुसूचित जातियों का शैक्षिक पिछड़ापन दूर हो रहा है तथा सरकारी नौकरियों में वरीयता मिलने से उनकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार हो रहा है जिसके कारण वे नये वर्ग के रूप में विकसित हो रहे हैं। आज के भारतीय समाज में वर्ग के रूप में लम्बवत गतिशीलता बढ़ रही है इससे जाति व्यवस्था की परम्परागत संरचना प्रभावित हो रही है और उनमें वर्ग चेतना का उदय हो रहा है।[6] जाति व्यवस्था की संरचना धीरे–धीरे विघटित हो रही है और परम्परागत रूप से विद्यमान सामाजिक श्रम विभाजन की परम्परा समाप्ति की ओर है। जाति व्यवस्था के बंधन धीरे–धीरे शिथिल पड़ रहे हैं। हालाँकि सांस्कृतिक क्षेत्र में जाति व्यवस्था अपनी मूल विशेषताओं को बनाए हुए है परन्तु समाज में आर्थिक श्रम विभाजन का महत्व बढ़ जाने के कारण पहले की अपेक्षा इनका महत्व कम हुआ है। इस संदर्भ में मैक्सवेबर का कहना था कि पश्चिमी शिक्षा के फलस्वरूप जाति व्यवस्था की पकड़ धीरे–धीरे कम होगी। सिन्हा के अनुसार, जातीय संस्तरण में कुछ विशेषताएँ लुप्त हो रही हैं, विशेषकर ऊँच–नीच की भावना।[7] अतः जाति व्यवस्था के आधार पर उच्च और निम्न की भावना भविष्य में समाप्त हो जायेगी। यदि व्यापक दृष्टिकोण से देखा जाये तो भारतीय संविधान के अंतर्गत जातियों को वर्गों के रूप में माना गया है। इसीलिए जाति संघर्ष को वर्ग संघर्ष के रूप में देखा जा रहा है। जाति संघर्ष के आधार पर वर्ग संघर्ष लाया जा सकता है और यह तभी संभव होगा जब उच्च जाति के गरीब लोग निम्न जाति के गरीबों से मिले। इसके लिए जातियों को वर्ग में बदलना होगा। दूसरे शब्दों में भारतीय सामाजिक व्यवस्था में जातियों के प्रभाव को कम करना होगा।

जाति–वर्ग एवं राजनीति

आजादी के 75 साल व्यतीत हो जाने तथा आर्थिक तरक्की कर लिये जाने के बावजूद भी भारतीय समाज आज भी जाति के प्रभाव में है। ग्रामीण भारत के सामाजिक तत्वों का विश्लेषण करने पर यह पता चलता है कि वहाँ जाति–वर्ग और सत्ता पर आधारित सामाजिक स्तरीकरण बन रहा है। सामाजिक स्तरीकरण के सम्बन्ध में दो विद्वानों – कार्ल मार्क्स एवं मैक्सवेबर के विचार महत्वपूर्ण हैं। कार्ल मार्क्स ने समाज को दो वृहद् भागों में विभाजित किया

है – स्वामित्व वाला वर्ग (पूँजीपति) तथा गैर स्वामित्व वाला वर्ग (मजदूर)। मैक्सवेबर ने सामाजिक स्तरीकरण का निर्धारण तीन आधारों पर किया है। उनका कहना है कि समाज में सम्पत्ति, सत्ता और सम्मान ये तीन ऐसे कारक हैं जिनके आधार पर किसी भी समाज में स्तरीकरण का निर्माण होता है। हेलर का भी कहना है कि यह तीनों – सम्पत्ति, सत्ता और सम्मान, असमानता के आधार पर स्तरीकरण को जन्म देते हैं।[8]

आज के ग्रामीण भारत में जाति–वर्ग और राजनीति तीनों का एक–दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध पाया जाता है। डिसूजा और आंद्रे बेत्तई के अनुसार, ग्रामीण भारत में जाति–वर्ग और राजनीति के संबंध में विभिन्न प्रकार की मनोवृत्ति दिखलायी पड़ रही है, जो स्थान, समय और अन्य कारकों के अंतःक्रिया से प्रभावित होते हैं। इन कारकों को दो भागों में बाँटा जा सकता है – संरचनात्मक कारक तथा वातावरण से सम्बन्धित कारक। संरचनात्मक कारक सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है। इन पर जाति–वर्ग, राजनीतिक संगठन या दल, ग्राम पंचायत, जाति पंचायत, न्याय पंचायत आदि संस्थाओं का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। वातावरण सम्बन्धी कारक के अन्तर्गत भौगोलिक स्थिति तथा विकासवादी गतिविधियों आदि का समावेश होता है।[9–10] ये सभी कारक जाति–वर्ग एवं राजनीति पर किसी न किसी रूप में प्रभाव डालते हैं। अतः ये कारक एक–दूसरे से अंतःसम्बन्धित हैं।

ग्रामीण भारत में विद्यमान जाति–वर्ग संरचना का प्रभाव भारत की राजनीतिक संरचना पर भी पड़ रहा है। इन तीनों के परस्पर अंतःक्रिया के फलस्वरूप ग्रामीण संरचना, विशेषकर राजनीतिक संरचना, प्रभावित होती है। ग्राम पंचायतों का इसमें योगदान प्रमुख हैं। महात्मा गाँधी का कहना था कि ग्राम पंचायतें ग्रामीण समाज के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूपान्तरण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। जितना अधिक सत्ता या अधिकार इन पंचायतों को मिलेगा उतना ही अधिक प्रजातांत्रिक विकेन्द्रीकरण होगा।

राजनीति ही वह कारक है जो समाज में गतिशीलता लाती है और अनेक प्रकार के सामाजिक परिवर्तनों का मार्ग प्रशस्त करती है। राजनीति का महत्वपूर्ण सम्बन्ध सत्ता, प्रभुत्व, प्रभाव आदि से है। सत्ता के माध्यम से कोई व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह अपनी इच्छा को जनता के ऊपर लागू करते हैं और लोगों के व्यवहारों पर नियंत्रण रखते हैं। मैक्सवेबर का कहना है कि राजनीति के माध्यम से लोग सत्ता को प्राप्त करने के लिए अथक प्रयास करते हैं और वितरण की व्यवस्था पर प्रभाव डालते हैं। वेटली ने भी कहा है कि राजनीति सत्ता के लिए किया गया संघर्ष है। सत्ता में अनेक प्रकार के सामाजिक सम्बन्ध पाये जाते हैं जिसमें व्यक्ति मनोवैज्ञानिक रूप से दूसरे पर नियंत्रण स्थापित करता है।

प्राचीन काल में जाति व्यवस्था ही नेतृत्व संरचना का आधार थी। वी0के0 मेनन का कहना है कि स्वतंत्रता के बाद से राजनीतिक क्षेत्र में जाति का प्रभाव बढ़ा है। वर्तमान समय में भी राजनीति जातियों की उपेक्षा नहीं कर सकती है। जाति भारतीय समाज की वास्तविकता है। भारत की राजनीतिक संरचना, जिसके सदस्यों का चुनाव लोकतांत्रित ढंग से जनता द्वारा किया जाता है, वे बहुधा अपनी राजनीति जाति के आधार पर करते हैं। चुनाव के दौरान उम्मीदवार का चयन भी उसकी जाति के आधार पर किया जाता है। उम्मीदवार की जीत या हार बहुधा जाति की संख्या पर निर्भर होती है। निर्वाचन क्षेत्र में जिस जाति की संख्या अधिक होती है उस उम्मीदवार के जीतने की संभावना सबसे अधिक होती है।[11] जाति भारतीय समाज की राजनीति

में रचा–बसा है। अक्सर यह कहा जाता है कि भारत के लोग अपना वोट नहीं देते बल्कि अपनी जाति को वोट देते हैं।[12] मॉरिस जोन्स का कहना बिल्कुल सही है कि बेशक भारत के महान नेता जातिविहीन समाज की बात करते हों परन्तु ग्रामीण भारत के लोग केवल पारम्परिक राजनीति को ही समझते हैं। पारम्परिक राजनीति की भाषा जाति के इर्द–गिर्द घूमती है।[13] जाति एवं राजनीति के अंतर्सम्बन्धों पर टिप्पणी करते हुए मॉरिस जोन्स ने कहा है कि राजनीति जाति से ज्यादा महत्वपूर्ण है और जाति राजनीति से ज्यादा महत्वपूर्ण है। वहीं जय प्रकाश नारायण का कहना है कि भारत में जाति सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक दल है। जगदीश चंद्र जौहरी तो यहाँ तक कहते हैं कि अगर मनुष्य को राजनीति में आगे बढ़ना है तो उसे अपनी जाति एवं धर्म को अपने साथ रखना होगा।[14]

निष्कर्ष

वर्तमान परिदृश्य में जाति–वर्ग और राजनीति तीनों का सम्बन्ध बहुत ही महत्वपूर्ण है। राजनीतिक क्षेत्र में निम्न जाति एवं निम्न वर्ग में जो भी परिवर्तन हो रहा है वह लम्बवत गतिशीलता के रूप में हो रहा है।

एम0एन0 श्रीनिवास का संस्कृतिकरण का सिद्धांत भारतीय राजनीति पर सटीक नहीं बैठता है। संस्कृतिकरण के सिद्धान्त में श्रीनिवास ने सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में क्षैतिजीय गतिशीलता की बात की है। उनका कहना है कि निम्न जातियॉ अपने से उच्च जातियों के खानपान, रहन–सहन, वेशभूषा, धार्मिक अनुष्ठान आदि का अनुसरण करती हैं जबकि देखा जाय तो राजनीति के क्षेत्र में निम्न जाति और निम्न वर्ग के लोग उच्च जाति और उच्च वर्ग से द्वंद कर रहे हैं।[15] निम्न जाति एवं निम्न वर्ग के लोग जो अब तक सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में उच्च जाति एवं उच्च वर्ग के लोगों का अनुसरण करते थे, वे अब राजनीतिक क्षेत्र में उनके प्रतिद्वंदी बन गये हैं। राजनीतिक क्षेत्र में निम्न जाति के लोग एक समूह के रूप में संगठित होकर अपने को निरन्तर शक्तिशाली बना रहे हैं।

वर्तमान में भारतीय समाज का विश्लेषण करने पर यह पता चलता है कि एक सामाजिक तथ्य के रूप में तो जाति व्यवस्था कमजोर हो रही है परन्तु राजनीतिक क्षेत्र में यही जाति एक समूह के रूप में एकीकृत होकर व्यवहार कर रही है। आज भारतीय समाज में निम्न जाति या निम्न वर्ग का जो संघर्ष तीव्र होकर राजनीतिक क्षेत्र को प्रभावित कर रहा है, वह मुख्यतः उच्च जातियों के विरोध[16] तथा सत्ता पर नियंत्रण करने की चाहत है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. Shridhar Venkatesh Ketkar, The History of Caste in India : Evidence of the Laws of Manu on the Social Conditionsin India During the Third Century A.D., Reprint, Rawat Publications, Jaipur, 1979, Page 15
2. David McLelan, The Thought of Karl Marx : An Introduction, Reprint, Harper & Row, 1972, Page 162, ISBN – 0060129042, 9780060129040
3. Bhimrao Ramji Ambedkar, Who Were the Shudras ? : How They Came to be the Fourth Varna in the Indo-Aryan Society, Thackers, 1970
4. Daniel Thorner, The Agrarian Prospect in India: Five Lectures on Land Reform

Delivered in 1955 at the Delhi School of Economics, Allied Publishers, 1976, ISBN-0883869209, 9780883869208

5. Shard Patil, Dielectical of Class and Caste Conflict, Economic & Political Weekly, No. 22, Page 425-426
6. Lloyd I. Rudolph, Susanne Hoeber Rudolph, The Modernity of Tradition : Political Development of India, The University of Chicago Press, Chicago & London, 1967, Page 36 to 103, ISBN – 0-226-73137-5
7. D. Sinha, A Psychological Analysis of Caste Tension, Indian Psychological Review, 1964, Page 25
8. A.O. Heller, Rural Sociology Chapter – Change the Structure of Social System, 1970
9. V.S. D'Souza, Caste and Class : A Reinterpretation, Journal of Asian and African Studies, Vol. 2 (3-4), 1967
10. Andre Beteille, Caste, Class and Power – Changing Patterns of Stratification in a Tanjore Village, Barkeley and Los Angle, University of California Press, 1965
11. Hindpedia.com/भारतीय–राजनीति–में जातिव/
12. इंडिया टूडे, नई दिल्ली 22 सितम्बर, 2021 पेज 3
13. Hindpedia.com/भारतीय–राजनीति–में जातिव/
14. वही
15. M.N. Srinivas, Social Change in Modern India, Orient Longman Private Limited, New Delhi, 1966
16. Alan R. Beals, Interplay Among Factors of Change in a Mysore Village, 1955, Page 100

●